जिला शिमला की देवठाणियों का कलात्मक सौन्दर्य

अनूप कुमार
शोधकर्त्ता पी–एच.डी., दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला

भूमिका

लघु मन्दिर स्थानीय समाज व संस्कृति का दर्पण होते हैं। स्थानीय सामाजिक जीवन में लघु मन्दिर एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में भूमिका निभाते हैं। यह केवल एक धार्मिक संस्था नहीं है जो, सामूहिक लोकाचार व इच्छा शक्ति को दर्शाती है, बल्कि मानव गतिविधि के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है। क्षेत्र के प्रमुख देवता के साथ इन देवठियों का किसी ना किसी रूप से सीधा संबंध स्थापित होता है और इस प्रकार यह एक निश्चित समय और स्थान के सामाजिक और आर्थिक जीवन के पहलुओं को दर्ज कर सामाजिक जीवन में अपनी उपयोगिता सिद्ध करते हैं। आसपास के सामाजिक बदलावों को दर्ज करने के लिए मन्दिर सबसे संवेदनशील संस्थान है।

देवठाणि और मुख्य मन्दिर के परस्पर आपसी संबंध समाज में लोगों को मिलजुल कर रहने की प्रेरणा देते हैं। किसी भी परिवार या गांव की समस्या के समाधान के लिए स्थानीय लोग सर्वप्रथम ग्राम में बनी देवठी या स्थानीय देवी–देवता की शरण में जाते हैं। यदि वहां उनकी समस्या का समाधान नहीं होता तो उसके बाद ही लोग इलाके के प्रमुख देवता से संपर्क करते हैं। देवताओं की यह कार्यप्रणाली किसी सरकारी विभाग की तरह अपना कार्य निपटारा करती है। इस प्रकार की कार्य निष्ठा सामाजिक स्तर पर लोगों को भी संगठन बनाकर कार्य करने की प्रेरणा देते हैं।

हालांकि देवठाणियाँ एक धार्मिक संस्था है, जो अन्य मन्दिरों की भान्ति किसी भी समाज में निहित कला व संस्कृति के मौलिक व नैतिक मूल्यों को सदैव सकारात्मक ऊर्जा व प्रेरणा देते रहते हैं। इसलिए देवठाणियों का जीवन के विभिन्न पक्षों पर विशेष महत्व है।

जिला शिमला पहाड़ी कला–वास्तुकला और देवप्रधान संस्कृति का महत्त्वपूर्ण संगम स्थल है। देवआसक्ति स्वरूप यहाँ असंख्य मंदिर विराजमान है जो अनूठी काष्ठ वास्तुकला और नक्काशी (काष्ठ उत्कीर्णन) के लिए विख्यात है। मन्दिरों के काष्ठ पर किया गया उत्कीर्णन व अलंकरण भाव पूर्ण और सम्मोहित करने वाला है। अद्वितीय कला के भण्डार ये मन्दिर क्षेत्र की सामाजिक व सांस्कृतिक विरासत की विशेषताओं को आत्मसात कर देव प्रधान संस्कृति का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसी देव प्रधान संस्कृति की झलक यहाँ की देवठाणियों के रूप में भी प्रदर्शित होती है। जिला शिमला में निर्मित अनेकों देवठाणियाँ नक्काशीदार स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन देवठाणियों की अदभुत कारीगरी देखने योग्य है। अपने ऐतिहासिक महत्व और काष्ठ पर निर्मित शानदार नक्काशी के कारण पहचाने जाने वाले इन मंदिरों में शिल्प सौन्दर्य का ऐसा बेजोड़ खजाना है जिसे अन्यत्र नहीं देखा जा सकता। देवठाणियों पर सृजित कलाकर्म के विषय भी अतीव सुन्दर है जिसमें पहाड़ी लोक–जीवन और धार्मिक संस्कृति के गुण

विद्यमान है। लघु–मन्दिरों के कई भागों पर सुन्दर बेल–बूटों का सृजन है तो कहीं ज्यामीतिय आरेखन अपना प्रभाव बिखेरते हैं। स्थानीय देवी–देवताओं के सृजन में प्रस्फुटित भावपूर्ण लावण्य और लोच तथा वास्तुनिर्माण में निपुणता कारीगरों के उत्कीर्णन के सूक्ष्म ज्ञान और काष्ठ कर्म पर असाधारण कौशल का परिचय देती है। मन्दिर भवनों के प्रवेश द्वार, स्तंभ, बरामदों, दीवारों पर उत्कीर्णित शिल्प रस, भाव और अलंकरण की परिभाषा गढ़ते प्रतीत होते हैं। भवन का प्रत्येक पक्ष काष्ठ कला की अनूठी मिसाल है। क्षेत्र में निर्मित देवठाणियों का सौन्दर्य और वास्तु एक से बढ़कर एक है। पुष्प–पत्तियों, पशु–पक्षियों, ज्यामीतिय घुमावदार संयोजन और स्थानीय देवी–देवताओं की दर्शनीय छवियाँ इत्यादि सभी आकृतियों पर शायद ही कोई ऐसा अंश हो जहाँ पर भावपूर्ण कलाकर्म के प्रामण न दिखते हों।

मन्दिर के भवन निर्माण में आधार से लेकर शीर्ष तक लकड़ी का सुनियोजित प्रयोग इस क्षेत्र की अनुठी मन्दिर वास्तुकला को बिना किसी सजावटी नक्काशी के भी भव्य सौन्दर्य प्रदान करता है। मन्दिरों की दीवरों में प्रयुक्त लकड़ी का सुनियोजित क्रम पत्थरों के मिश्रण से दीवार को प्राकृतिक रंग संयोजन प्रदान करता है, जो दीवार को सादगी व सुन्दरता के साथ दीर्घायु प्रदान करता है। इसी प्रकार मन्दिर के शीर्ष पर विभिन्न छत को शैलियों का मिश्रण, काष्ठ आधार से ही संभव हो पाया है। छत को विभिन्न प्रकार और संयोजन प्रदान करने के लिए इसे अनेक ऊँचाइयों के मध्य विभाजित किया जाता है। इस प्रकार के विभाजन के अन्तराल पर काष्ठ को विभिन्न प्रकार जैसे– वर्गाकार, षष्ठभुज, अष्ठभुजाकार या छतरीनुमा प्रकार में लकड़ी के अनेक वर्गाकार टुकड़ों से निर्माण किया जाता है, जो छत को अलग ही प्रकार का सौंदर्य देता है। इस क्षेत्र के लगभग सभी लघु–मन्दिरों की छत लकड़ी के आधार पर ही निर्मित है। छत की शीर्ष पर 'कुरड़ स्थापना' धार्मिक दृष्टि के साथ–साथ वास्तुकला पक्ष से भी मन्दिर निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। 'कुरड़' सदैव काष्ठ में निर्मित होता है। कुरड़ स्थापना के बाद मन्दिर एक अजीब सी सम्पूर्णता का भाव प्रदान करता है।

छत के भार संतुलन के लिए निर्मित काष्ठ स्तंभ मन्दिर की आधार भूमि से ही उठाए गए हैं, जो छत को संतुलित करने के साथ बरामदा और प्रदक्षिणा पथ को भी निर्दिष्ट करते हैं। इन स्तंभों को वर्गाकार, गोलाकार या अष्टभुजाकार रूप में निर्मित किया गया है जिन्हें संस्कृत भाषा में वास्तुविन्यास के अन्तर्गत रूख (वर्ग), बज्र (अष्टभुज) तथा वृत (गोलाकृति) शब्द प्रयुक्त किए गए हैं। स्तंभ निर्माण के लिए निर्धारित बनावट के विभिन्न उपक्रम जो भारतीय मन्दिर निर्माण शैली के घटक के रूप में परिभाषित किए गए हैं, इस प्रकार के बनावट उपक्रम का पालन स्थानीय मन्दिरों में निर्मित काष्ठ स्तंभ की सरंचना में भी देखा जा सकता है। जिसमें स्तंभ का आधार वर्गाकार बनावट के साथ स्तंभ की मोटाई की अपेक्षा अधिक विस्तृत आकार में निर्मित है। इसके उपर का भाग (शाफ्ट) वर्गाकार, अष्टभुजाकार या वृताकार बनावट के साथ निर्मित है, जिसके उपर गोल या अन्य आकार की पट्टिका निर्माण के बाद शीर्षक्रम आधार के अनुरूप विस्तृत आकार में बना होता है। आम तौर पर शीर्षक्रम आधार से अधिक विस्तृत होता है जो भार संतुलन हेतू काष्ठ संरचना के निर्माण में सहायक होता है। स्तंभ निर्माण में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की बनावट आकृति का संदर्भ मत्तस्य पुराण में भी मिलता है।

स्थानीय काष्ठ मन्दिरों में स्तंभ, प्रवेश द्वार के अतिरिक्त खिड़कियां भी काष्ठ में निर्मित हैं। जिसकी चौखट पर विभिन्न परतों का प्रतीकात्मक भ्रम दिखाने की कोशिश की गई है। मन्दिर के बरामदे की बाहरी सीमा पर रैलिंग का निर्माण भी लकड़ी में ही किया गया है। जो मन्दिर वास्तु की शोभा को और

भी आकर्षक बनाता है। मन्दिर के गर्भगृह की अन्दरूनी छत (ब्मपसपदह) को लकड़ी की वर्गाकार या आयताकार फ्रेम से तैयार किया जाता है। निश्चित आकार में तैयार लकड़ी की फ्रेम से छत का सुन्दर पैट्रन तैयार हो जाता है। यही पैट्रन बरामदे और परिक्रमा पथ पर भी लागू किया जाता है। इस प्रकार मंदिर संरचना में लकड़ी का भरपूर उपयोग दीवारों, स्तंभो, छत, प्रवेश द्वार खिड़की, बरामदा, रैलिंग इत्यादि के रूप में नक्काशी के लिए कारीगरों को खुला मंच प्रदान करता है। स्थानीय कारीगरों ने भी मन्दिर संरचना में प्रयुक्त काष्ठ पर अपनी प्रतिभा और कौशल का परिचय देते हुए बेमिसाल नक्काशी से सजाकर स्थानीय (पहाड़ी) काष्ठ कला का बेजोड़ उदाहरण कला जगत के समक्ष प्रस्तुत किया है।

आरम्भ से ही मनुष्य ने जब भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए रूप या आकार देने की चेष्टा की तो, प्रकृति ही उसका चित्रपट्ट थी, जिस पर मनुष्य अपनी ईच्छा अनुसार माध्यम और उपकरण चुनने को स्वतन्त्र था। हिमालयी परम्परा के दुर्गम ओर श्रमसाध्य जीवन को मनुष्य ने आत्मसात करते हुए दिव्य काष्ठ (देवदार) को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम चुना, जो इस क्षेत्र को प्रकृति का वरदान है। जिसका उदाहरण आज यहाँ निर्मित शानदार काष्ठ मन्दिरों के रूप में हमारे समक्ष है।

जिला शिमला के कुछ प्राचीन लघु मन्दिरों के अन्तर्गत उत्कीर्णित नक्काशी हिमाचल प्रदेश के ऐतिहासिक शास्त्रीय काष्ठ मन्दिरों से प्रेरित लगती है। इन लघु–मन्दिरों की उत्कीर्णन पद्धति और नक्काशी के विषय शास्त्रीय काष्ठ मन्दिरों से बहुत समानता रखते हैं इन लघु मन्दिरों की नक्काशी के विषय प्रमुख रूप से मानवाकृतियों पर आधारित है। जिसके अन्तर्गत वैदिक दैवी–देवताओं के साथ–साथ रामायण और महाभारत की घटनाओं पर आधारित उच्च कोटि के लोक कला शैली में शिल्प निर्मित किए गए हैं। देवी–देवताओं की आकृतियाँ विभिन्न आभूषणों से अलंकृत है। विभिन्न प्रकार की मानवाकृतियों पर उत्कीर्णित वस्त्राभूषणों में अलंकरण दर्शनीय है। देवी–देवताओं की आकृतियों में सहायक संयोजन के रूप में विभिन्न प्रकार के ज्यामीतिय अलंकरण प्रभावशाली होने के साथ–साथ भाव और लावण्य से भरपूर है। विषयों के अंतर्गत स्थानीय देवी–देवताओं और समाजिक जीवन से जुड़े दृश्य प्राचीन काष्ठ कला के जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। प्रवेश द्वार की चौखट, स्तंभों पर देवी–देवताओं के विविध रूपों के उत्कीर्णन में शिल्पियों का श्रम देखते ही बनता है। जीवन की जीवंतता और आनन्दमयी क्षणों की अभिव्यक्ति विभिन्न मानवाकृतियों में स्पष्ट दर्शनीय है। अनेक पशु–पक्षियों, सर्पाकृतियों की बेजोड़ दृश्यावलियाँ अलंकरण में विविधता दर्शाती है। नक्काशी के विभिन्न विषय और कलात्मक शैलियाँ काष्ठ शिल्प के रूप में क्षेत्रिय विविधताओं और परम्पराओं को और अधिक समृद्ध करते हैं।

उपसंहार

जिला शिमला के विभिन्न भू–भागों पर निर्मित समकालीन लघु मन्दिर लोक–जीवन व लोक संस्कृति का दर्पण कहे जा सकते हैं। ग्रामीण जीवन की विविध परम्पराओं को बड़ी ही कुशलता पूर्वक मन्दिरों के काष्ठ पर निरूपित किया गया है। स्थानीय देवी–देवताओं के अनेकों प्रसंग उत्कृष्ट और प्रभावशाली हैं। इसके अलावा पहाड़ी समाज में प्रचालित पौराणिक मान्यताओं, दन्त कथाओं, लोक गाथाओं और रहस्यपूर्ण धार्मिक परम्पराओं का निरूपण विस्मयकारी और रोमांचित करने वाला है। ये लघु–मन्दिर जिला शिमला की पारम्परिक 'लोक कला' के आधार स्तंभ कहे जा सकते हैं।

संदर्भ सूची

कुमार, संजीव डॉ. (2016), जिला शिमला के कलात्मक मोहरे– एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला।

शर्मा, बंशी राम (1986) हिमाचल लोक संस्कृति के स्त्रोत, दिल्ली।

शर्मा, नागेन्द्र (1996) हिमालय का उतरांचल रामपुर बुशैहर, बलीभद्र प्रकाशन रामपुर।

शर्मा, नागेन्द्र (1989) बुशहर के प्राचीन एवं ऐतिहासिक मन्दिर, बलीभद्र प्रकाशन, रामपुर बुशैहर।

Charak, Sukh Dev Singh (1978) History and culture of Himalayan States Vol. III, Himachal Pradesh Part III, New Delhi.

Chaudhary, Minakshi (2006) Himachal A complete Guide to the Land of Gods, Rupa. Publisher Co. Delhi.

Coomaraswamy, Ananda K. (1989) The Indina Craftsman, 1909, Delhi: Munshiram Manoharlal.

Handa, O.C. (2002) Temple Architecture of the Western Himalaya, Indus Publishing Company, Delhi.

Singh, Mian Goverdhan (2012) Art and Architecture of Himachal Pradesh, B.R, Publishing, Delhi